जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया

31 जनवरी, 2025

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया मिल्लिया इस्लामिया ने "अंतरधार्मिक और अंतरसांस्कृतिक संवाद" पर विशेष व्याख्यान आयोजित किया

मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र (एमएमटीटीसी) और तुलनात्मक धर्म और सभ्यता केंद्र (सीसीआरसी), जामिया मिल्लिया इस्लामिया द्वारा संयुक्त रूप से मंगलवार, 28 जनवरी 2025 को मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र में 'अंतरधार्मिक और अंतरसांस्कृतिक संवाद' पर एक विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया।

जामिया मिल्लिया इस्लामिया के माननीय कुलपति, प्रो. मजहर आसिफ, इस कार्यक्रम के मुख्य संरक्षक और अध्यक्ष थे, और जामिया मिल्लिया इस्लामिया के कुलसचिव प्रो. मोहम्मद महताब आलम रिजवी मुख्य अतिथि थे। मुख्य वक्ता अरस्तू विश्वविद्यालय, थेसालोनिकी, ग्रीस के प्रख्यात विद्वान और जिनेवा के विश्व चर्च परिषद (डब्ल्यूसीसी) में अंतरधार्मिक संवाद और सहयोग के कार्यक्रम कार्यकारी प्रो. एंजेलिकी जियाका थे।

प्रो. कुलविंदर कौर, मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण केंद्र (एमएमटीटीसी) और तुलनात्मक धर्म और सभ्यता केंद्र (सीसीआरसी) की मानद निदेशक मानद ने अपने परिचयात्मक भाषण में कहा कि व्याख्यान का विषय "अंतरधार्मिक और अंतरसांस्कृतिक संवाद" जामिया के धार्मिक और सांस्कृतिक सहिष्णुता, विविधता के प्रति सम्मान एवं समावेशिता के लोकाचार के साथ गहराई से जुड़ा हुआ है। उन्होंने आज की दुनिया में संवाद की प्रासंगिकता, पूर्वाग्रहों को खंडित करने और सबसे चुनौतीपूर्ण परिस्थितियों में भी हल करने और सुलह करने में इसकी भूमिका के बारे में भी बात की। सिख परंपरा के साथ काम करने के अपने अनुभव का हवाला देते हुए उन्होंने सेवा (सामुदायिक सेवा) और लंगर (सामुदायिक रसोई) की भूमिका के बारे में बात की जो महान सेतु संस्थाएँ हैं।

कुलपति प्रो. मज़हर आसिफ ने अपने भाषण में भारत की धार्मिक और सांस्कृतिक विविधता तथा सहिष्णुता की समृद्ध परंपरा पर प्रकाश डाला। कुरान, फ़ारसी और उर्दू शायरी की आयतों को उद्धृत करते हुए कुलपति ने इस बात पर बल दिया कि धर्म की सच्ची भावना न केवल अनुष्ठानों के प्रदर्शन में निहित है बल्कि पूजा का सबसे अच्छा रूप प्रेम, करुणा और मानवता की सेवा है। इस अवसर पर बोलते हुए जामिया मिल्लिया इस्लामिया के कुलसचिव प्रो. महताब आलम रिजवी ने शांति को बढ़ावा देने में अंतरधार्मिक संवाद की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने सद्भाव और संघर्ष समाधान के लिए अंतरसांस्कृतिक और अंतरधार्मिक संचार की आवश्यकता पर बल दिया।

मुख्य वक्ता प्रो. जियाका ने अपने देश ग्रीस के विशेष संदर्भ में अंतरधार्मिक संवाद की उत्पत्ति और इतिहास के बारे में चर्चा की और अंतरधार्मिक और अंतरधार्मिक संवाद के बीच अंतर को उजागर किया। उन्होंने अपने विश्वविद्यालय में इस्लामिक अध्ययन में स्नातक कार्यक्रम की शुरुआत किए जाने और संघर्षों को याद किया जो अब कुरान के अध्ययन और व्याख्या सहित इस्लाम की विभिन्न अभिव्यक्तियों को

शामिल करने वाले क्षेत्रों में प्रशिक्षण प्रदान करता है। उन्होंने जोर देकर कहा कि अंतरधार्मिक संवाद की सफलता दूसरे को जानने, सम्मान करने और उसकी रक्षा करने की इच्छा पर निर्भर करती है और हठधर्मिता और अपने धार्मिक मूल्यों को खोने का डर अंतरधार्मिक संवाद के लिए हानिकारक है। इसके स्थान पर सामाजिक और मानवतावादी दृष्टिकोण की विशेषता वाले अंतरसांस्कृतिक संवाद को एक विकल्प के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है, क्योंकि यह धार्मिक पूर्वाग्रहों से मुक्त है।

प्रो. ज़ियाका की प्रस्तुति के उपरांत दो चर्चाकर्ताओं, प्रो. अज़रा आबिदी (समाजशास्त्र विभाग) और डॉ. एनी कुन्नथ (सीसीआरसी) की टिप्पणियाँ आईं। तुलनात्मक धर्म और सभ्यता केंद्र के संकाय सदस्य डॉ. अहमद सोहैब ने चर्चा का संचालन किया। डॉ. खालिद रज़ा ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

जनसंपर्क कार्यालय
जामिया मिल्लिया इस्लामिया